अनुवाद

महापुरुष जो-जो आचरण करता है, साधारण मनुष्य उसका अनुसरण करते हैं। वह पुरुष अपने विलक्षण कर्मों से जो आदर्श स्थापित कर देता है, सम्पूर्ण विश्व उसके अनुसार कार्य करता है।।२१।।

तात्पर्य

जनसाधारण को सदा एक ऐसे लोकनायक की अपेक्षा रहती है, जो अपने व्यावहारिक आचरण से जनता को शिक्षित कर सके। जो स्वयं धूम्रपान का व्यसनी हो, वह जनता को ऐसा न करने का उपदेश नहीं दे सकता। श्रीचैतन्य महाप्रभु की वाणी है कि दूसरों को शिक्षा देने से पूर्व शिक्षक को स्वयं सदाचार का पालन करना चाहिए। इस प्रकार जो अपने सदाचरण से लोक-शिक्षा देता है, उसे 'आचार्य' अर्थात् आदर्श गुरु कहा जाता है। अतएव जनसाधारण में शिक्षा का व्यापक प्रसार करने के लिए शिक्षक को स्वयं भी शास्त्रीय सिद्धांतों का परिपालन करना चाहिए। यथार्थ आचार्य शास्त्र-विरुद्ध विधान नहीं कर सकता। मनुस्मृति जैसे सत्-शास्त्रों को मानव समाज के लिए अनुसरणीय आदर्शशास्त्र माना जाता है। इस प्रकार यह आवश्यक है कि लोकनायक की शिक्षा महान् आचार्यों द्वारा आचरित आदर्श नियमों पर आधारित हो। श्रीमद्भागवत से प्रमाणित होता है कि महाभागवतों का अनुसरण करना चाहिए क्योंकि इसी के द्वारा भगवत्प्राप्ति के पथ पर उन्नति हो सकती है। राजा अथवा राज्य के सर्वोच्च कार्यकारी, पिता तथा अध्यापक अबोध जनता के स्वाभाविक नायक हैं। इनका अपने आश्रितों के प्रति विशेष दायित्व है। इसके लिए आवश्यक है कि ये नीति और परमार्थ के प्रामाणिक शास्त्रों में पारंगत हों।

11/3

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।।२२।।

न=नहीं; **मे**=मुझे; **पार्थ**=हे पार्थ; **अस्ति**=है; **कर्तव्यम्**=कर्तव्य; **त्रिषु**=तीनों; **लोकेषु**=लोकों में; **चिंन**=कुछ भी; **न**=नहीं; **अनवाप्तम्**=अप्राप्त; **अवाप्तव्यम्**=प्राप्त होने योग्य पदार्थ; **वर्ते**=तत्पर हूँ; **एव**=निस्सन्देह; **च**=तथा; **कर्मणि**=कर्म में।

अनुवाद

हे पार्थ! त्रिभुवन में मेरे लिए कुछ भी कर्तव्य नहीं है; न तो मुझे किसी पदार्थ का अभाव है और न आवश्यकता ही है। फिर भी मैं कर्म में ही तत्पर हूँ।।२२।।

तात्पर्य

वेदों में श्रीभगवान् का यह वर्णन है:

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद् विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्।।
न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च।।